जपुजी साहिब

जिसे

भाई नत्थासिंह मालिक मतबा अमर प्रैस
अमृतसर ने बड़ी कोशिश नाल सोधके आपणे
यंत्रालय में आप लोगों के फ़ायदे वास्ते छपवाया

मोल प्रति पुस्तक ८॥

ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल
मूरति अजूनी सैभंगुर प्रसादि ॥

जपु ॥ आदि सचु जुगादि सचु । है भी सचु नानक होसी भी सच ॥ सोचै सोच न होवई जे सोची लखवार । चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिवतार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरी आभार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूडै तुटै पालि । हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई । हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई । हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि । इकना हुकमी

बखसीसि इक हुकमी सदा भवाईअहि। हुकमै अंदरि सभु को
बाहरि हुकम न कोई। नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ
॥२॥ गावै को ताणु होवै किसै ताणु। गावै को दाति जाणै नीसाणु।
गावै को गुण वडिआईआ चार। गावै को विदिआ विखमु वीचा
रु॥ गावै को साजि करे तनु खेहु॥ गावै को जीअ लै फिरि देह।
गावै को जापै दिसै दूरि। गावै को वेखै हादरा हदूरि। कथना क
थी न आवै तोटि। कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि। देदा दे लैदे
थकि पाहि। जुगा जुगंतरि खाही खाहि। हुकमी हुकमु चलाये
राहु। नानक विगसै वेपरवाहु॥३॥ साचा साहिबु साचु नाइ भा
खिआ भाउ अपारु। आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु

फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु । मुहौ कि बोलणु बोलिऐ
जितु सुणि धरे पिआरु । अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई विचारु
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु । नानक एवै जाणीऐ सभु
आपे सचिआरु ॥४ थापिआ न जाइ कीता न होइ । आपे आपु
निरंजनु सोई । जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु । नानक गावी-
ऐ गुणी निधानु । गावीऐ सुणीऐ मन रखीऐ भाउ । दुखु परहरि
सुखु घरि लै जाइ । गुर मुखि नादं गुर मुखि वेदं गुर मुखि रहिआ स-
माई । गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई । जे हउ जा-
णा आखा नाही कहणा कथनु न जाई । गुरा इक देहि बुझाई । स-
भना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥ तीरथि नावा

जे ति सुभावा विणु भाणे किनाइ करी । जेती सिर ठिज पाई वेखा
विणु करमा किमि ले लई । मत विच रतनजवा हरि माणिक जे इ
क गुर की सिख सुणी । गुरा इक देहि बुझाई । सम ना जिआ का इ
कु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥ जे जुग चारे आरजा होर दसु
णी होई । नवा खंडा विच जाणीये नालि चलै समु कोई ॥ चंगा
नाऊ रखाइकै जसु कीरति जग लेइ । जेति सुनदरिन आवई तवा
तन पुछैके । कीटा अंदरु कीटु कर दोसी दोसु धरे । नानक निरगु
णि गुणु करे गुणवंति आ गुणु दे । तेहा कोई न सुझई जितिसु गु
ण कोइ करे ॥७॥ सुणिऐ सिध पीर सुरिनाथ । सुणिऐ धरति
धवल आकास । सुणिऐ दीप लोअ पाताल । सुणिऐ पोहि न स-

फै कालु । नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दुख पापका नासु
८ ॥ सुणियै ईसर बरमा इन्दु । सुणिऐ मुख सालाहण मन्दु । सु
णियै जोग जुगत तन भेद । सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद । नान
क भगता सदा विगासू । सुणिऐ दुख पाप का नासु ॥९॥ सु
णिऐ सतु संतोखु गिआन । सुणिऐ अठसठि का इसनानु । सु-
णिऐ पढि पढि पावहि मानु । सुणिऐ लागै सहज धिआनु ॥ ना
नक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दुख पाप का नासु ॥ १०॥ सु
णिऐ सरा गुणा के गाहु । सुणिऐ सेख पीर पातसाहु । सुणियै
अंधे पावहि राहु । सुणिऐ हाथ होवै असगाहु । नानक भगता स
दा विगासु । सुणियै दुख पाप का नासु । ११ । मंने की गति कही

न जाइ। जे को कहै पिछै पछुताइ। कागदि कलम न लिखणुहारु। मंने का बहि करनि वीचारु। ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥ १२॥ मंनै सुरति होवै मनि बुधि। मंनै सगल भवण की सुधि। मंनै मुहि चोटा ना खाइ। मंनै जम कै साथि न जाइ। ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥ १३॥ मंनै मारगि ठाक न पाइ। मंनै पति सिउ परगटु जाइ। मंनै मगु न चलै पंथु। मंनै धरम सेती सनबंधु। ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥ १४॥ मंनै पावहि मोखु दुआरु। मंनै परवारै साधारु। मंनै तरै तारे गुरु सिख। मंनै नानक भवहि न भिख। ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मं

निकोई। १५। पंचपरवाणपंचपरधान। पंचे पावहि दरगहि
मानु। पंचे सोहहि दरि राजानु। पंचा का गुरु एकु धिआनु।
जे को कहै करै वीचारु। करते कै करणै नाही सुमारु। धौलु
धरमु दइआ का पूतु। संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति। जे
को बुझै होवै सचिआरु॥ धवलै ऊपरि केता भारु। धरती हो
रु परै होरु होरु। तिसते भारु तलै कवणु जोरु। जीअजाति रंगा
के नाव। सभना लिखिआ वुड़ी कलाम। येहु लेखा लिखि जाणै
कोइ। लेखा लिखिआ केता होइ। केता ताणु सुआलिहु रूपु।
केती दाति जाणै कोणु कूतु। कीता पसाउ इको कवाउ॥ जिसते
होये लख दरीआउ॥ कुदरत कवण कहा वीचारु। वारिआन

जावा येक वार। जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार॥१६॥ असंख जाप असंख भाउ। असंख पूजा असंख तपताउ॥ असंख गरंथि मुख वेद पाठ असंख जोग मनि रहहि उदास। असंख भगत गुण गिआन वीचार। असंख सती असंख दातार। असंख सूर मुह भख सार। असंख मोनि लिव लाइ तार। कुदरत कवण कहा वीचारु। वारिआ न जावा येक वार। जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार॥१७॥ असंख मूरख अंध घोर। असंख चोर हरामखोर। असंख अमर करि जाइ जोर। असंख गलवढ हतिआ कमाइ॥ असंख पापी पापु करि जाहि असंख कूडिआर कूडे फिराहि। असंख मलेछ मलु भखि खाहि

असंख निंदक सिरि करहि भारु । नानकु नीचु कहै वीचारु ।
वारिआ न जावा येक वार । जो तुधु भावै साई भली कार । तू स
दा सलामति निरंकार ।१८। असंख नाव असंख थाव । अगंम
अगंम असंख लोअ । असंख कहहि सिरि भारु होइ । अखरी
नामु अखरी सालाह । अखरी गिआनु गीत गुण गाह । अख
री लिखणु बोलणु बाणि । अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि येहि लिखे तिसु सिरि नाहि । जिव फुरमाए तिव तिव पा
हि । जेता कीता तेता नाउ । विणु नावै नाही को थाउ । कुदरति
कवण कहा । वीचारु । वारिआ न जावा ऐक वार । जो तुधु भा
वै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥ भरीऐ

हथु पैरु तनु देह । पाणी धोतै उतरसु खेह । मूत पलीती कप
ड़ होइ । दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ । भरीऐ मति पापा कै संगि
ओहु धोपै नावै कै रंगि । पुंनी पापी आखणु नाहि । करि करि
करणा लिखि लै जाहु । आपे बीजि आपे ही खाहु । नानक हु
कमी आवहु जाहु ॥२०॥ तीरथु तपु दइआ दतु दानु । जे को
पावै तिल का मानु । सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ । अंतर
गति तीरथि मलि नाउ । सभि गुण तेरे मै नाही कोइ । विणु गु
ण कीते भगति न होइ । सुअसति आथि बाणी बरमाउ । स-
ति सुहाणु सदा मनि चाउ । कवणु सु वेला वखतु कवणु क-
वण थिति कवणु वारु । कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ

आकारु। केतन पाईआ पंडती जिहोवैलेखु पुराणु। करवतु नया तूउकार्दाआ जिलिखनि लेखु कुराणु। थिती वारु नाजोगी जाणे रुति माहु नाकोई। जाकरता सिरठीक उसाजे आपे जाणे सोई। किव करिआखा। किव सालाही किउ वरनी किवजाणा। नानक आखणि सभु को आखे इकु दूइकु सिआणा॥ वडा साहिबु व डी नाई कीता जाका होवे॥ नानक जो को आपे जाणे अगे गया

न सोहे॥ २१॥ पाताला पाताल लख आगासा आगास। उड क उडक भालि थके वेद कहनि इकवात। सहस अठारह कहन कतेबा असुलू इक धातु। लेखा होइत लिखिऐ लेखे होइ विणा सु। नानक वडा आखीऐ आपे जाणे आपु २२। सालाही सालाहि

ऐतीसुरति न पाईआ । नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणी अहि। समुद शाह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु। कीडी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि २३। अंतु न सिफती कहणि न अंतु। अंतु न करणै देणि न अंतु। अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु। अंतु न जापै किआ मनी मंतु। अंतु न जापै कीता आकारु, अंतु न जापै पारावारु। अंत कारणि केते बिललाहि। ताके अंत न पाए जाहि। एहु अंतु न जाणै कोइ। बहुता कहीऐ बहुता होइ। वडा साहिबु ऊचा थाउ। ऊचे ऊपरि ऊचा नाउ। एवडु ऊचा होवै कोइ। तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ। जेवडु आपि जाणै आपि आपि। नानक नदरी करमी दाति॥२४। बहुता करमु।

खिआ ना जाइ। वडा दाता तिलु न तमाइ। केते मंगहि जोध अपार
। केतिआ गणत नही वीचारु। केते खपि तुटहि वेकार। केते लै
लै मुकरु पाहि। केते मूरख खाही खाहि। केतिआ दूख भूख सद
मार। एहि भि दाति तेरी दातार। बंदि खलासी भाणै होइ॥ होरु
आखि न सकै कोइ। जे को खाइकु आखणि पाइ। उहु जाणै
जेतीआ मुहि खाइ। आपे जाणै आपे देइ। आखहि सि भि के
ई केइ। जिस नो बखसे सिफति सालाह। नानक पातिसाही
पातिसाहु। २५। अमुल गुण अमुल वापार। अमुल वापारीए
अमुल भंडार। अमुल आवहि अमुल लै जाहि। अमुल भाइ अ
मुल समाहि। अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु। अमुलु तुलु अमुलु

परवाणु।अमुलु बखसीस अमुलु निसाणु।अमुलु करमु अमुलु फुरबाणु।अमुलो अमुलु आखिआन जाइ।आखि आखि रहे लिवलाइ।आखहि वेद पाठ पुराण।आखहि पड़े करहि वखीआण।आखहि बरमे आखहि इन्दु।आखहि गोपी तै गोविन्द।आखहि ईसर आखहि सिध।आखहि केते कीते बुध।आखहि दानव आखहि देव।आखहि सुरनर मुनिजन सेव।केते आखहि आखणि पाहि।केते कहि कहि उठि उठि जाहि।एते कीते होर करेहि।ता आखि न सकहि केई केइ।जेवडु भावै तेवडु होइ।नानक जाणै साचा सोइ।जे को आखै बोलि विगाड़ु।ता लिखिऐ सिरि गावारा गावारु।२६॥ सो दरु केहा सो घरु

केहा जितु बहि सरबस माले। वाजे नाद अनेक असंखा केते वा
वण हारे। केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे। गाव
हि तुह नो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे। गावहि
चितगुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे। गावहि
ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे। गावहि इंद इंदासणि बैठे
देवतिआ दरि नाले। गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध वि
चारे। गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे। गावनि पं
डित पड़न रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले। गावहि मोहणी आ मनु
मोहन सुरगा मछु पइआले। गावनि रतन उपाये तेरे अठ सठि
तीरथ नाले॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे

गावहि खंड मंडल वर भंडा करि करि रखे धारे। सेई तुधु नो गा
वहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले। होरि केते गावनि से
मै चिति न आवनि नानक किआ विचारे। सोई सोई सदा स
चु साहिबु साचा साची नाई। है भी होसी जाइ न जासी रचना जि
नि रचाई। रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपा
ई करि करि वेखै कीता आपणा जिस तिस दी वडिआई।। जो ति
सु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई। सो पाति साहु साहा
पाति साहिबु नानक रहणु रजाई। २७। मुंदा संतोखु सरमु पतु
झोली ध्यान का करहि बिभूति। खिंथा कालु कुआरी काइआ
जुगति डंडा परतीति आई पंथी सकल जमाती मनि जीतै जगु

जोतु। आदेसु तिसै आदेसु। आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु। २८। भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद। आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद। संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग। आदेसु तिसै आदेसु। आदि अनीलु अनादि अनाहत जुगु जुगु एको वेसु॥ २९॥ एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु। इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु। जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु॥ उहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु। आदेसु तिसै आदेसु। आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु

की वेसु।३०॥आसणु लोयि लोइ भंडार।जे किछु पाइआ सु एका वार। कर कर वेखै सिरजणहारु। नानक सचे की साची कार। आदेसु तिसै आदेसु।आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु।३१॥ एक दूजी मोहि लख होहि लख होवहि लख वीस। लखु लखु गेडा आखीअहि एकु नामु जगदीसु। एतु राहि पति पवडीआ चडीऐ होइ इकीस।सुणि गला आकास की कीटा आई रीस।नानक नदरी पाईऐ कूडी कूडै ठीस॥३२॥ आखणि जोरु चुपै न हू जोरु।जोरु न मंगणि देणि न जोरु।जोरु न जीवणि मरणि नहू जोरु।जोरु न राज मालि मनि सोरु।जोरु न सुरती

गिआनु वीचारु ।जोरु न जुगती छूटै संसारु । जिसु हथि जोरु करि वेखै सोई । नानक उतमु नीचु न कोई ॥३३॥ राती रुती थिती वार । पवण पाणी अगनी पाताल । तिसु विचु धरती थापि रखी धरम साल । तिसु विचि जीअ जुगति के रंग । तिन के नाम अनेक अनंत । करमी करमी होइ विचारु । सचा आपि सचा दरबारु ।तिथै सोहनि पंच परवाणु । नदरी करमि पवै नीसाणु । कच पकाई उथै पाइ । नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥ धरम खंड का एहो धरमु । गिआन खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस । केते बरमे

घाडति घड़ीअहि रूप रंग के वेस। केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस। केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस। केते सिध बुध नाथ केते केते देवीवेस। केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद। केतीआ खाणी केती आ बाणी केते पातन रिंद। केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंत न अंत ॥३५ गिआन खंड महि गिआनु परचंड। तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु। सरम खंड की बाणी रूप। तिथै घाडति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ताकी आगला कथीआ ना जाहि। जे को कहै पिछै पछुताइ। तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥ करम खंड की बाणी जोरु। तिथै हो

रु न कोई होरु । तिथै जोध महा बल सूर । तिन महि रामु रहिआ भरपूर । तिथै सीतो सीता महिमा माहि । ताके रूप न कथने जाहि । ना ओहि मरहि न ठागे जाहि । जिन कै रामु वसै मन माहि । तिथै भगत वसहि के लोअ । करहि अनंदु सचा मनि सोइ । सचिखंडि वसै निरंकारु । करि करि वेखै नदरि निहाल । तिथै खंड मंडल वरभंड । जे को कथै त अंत न अंत । तिथै लोअ लोअ आकार । जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार । वेखै विगसै करि वीचारु । नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु । अहरणि मति वेदु हथीआरु । भउ खला अगनि तपताउ । भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि । घड़ीऐ सबदु

सचीटकसालु । जिन कउ नदरि करमु तिनकार । नानकन
दरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु । दिवसु राति दुइ
दाई दाइ आखे ले सगल जगतु । चगिआईआ बुरिआईआ
वाचै धरमुहि दूरि । करमी आपो आपणी के नेडे के दूरि ।
जिनु नामु धिआइआ गये मसकति घालि । नानक ते मुख
उजले केती छुटी नालि ॥१॥

जपुजी साहिब सम्पूर्ण

हज़ारे दे सबद

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ
निरवैर अकाल मूरति अजूनी सै
भंगुर प्रसादि ॥ ७ ॥ ७ ॥
माझ महल्ला ५ चउपदे घरु १

मेरा मन लोचै गुरु दरसन ताई। बिलप करे चात्रिक की निआई। त्रिखा न उतरै शांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुरु दरसन संत पि

आरे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा मुख सुहावा जीउ सहज धुनि बा
णी ॥ चिर होआ देखे सारिंग पाणी । धंन सुदेसु जहां तू व-
सिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥ हउ घोली हउ घोलि घु
माई गुरु सजण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक घड़ी ना मि
लते तां कलजुग होता । हुण कद मिलीऐ प्रिय तुधु भगवंता ।
मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिन देखे गुरु दरबारे जीउ ।
॥ ३ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुरु दरबारे जीउ
॥ १ ॥ भागु होआ गुर संतु मिलाइआ । प्रभु अबिनासी घर महि
पाइआ । सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे
जीउ ॥ ४ ॥ हउ घोली जिउ घोलि घुमाई जन नानक दास तु

मारे जीऊ ॥१॥ ॥धनासरी महल्ला १ घरु १ चउपदे॥
जीऊ डरत है आपणा कैसिऊ करी पुकार।दूख विसारणु
सेविआ सदा सदा दातारु॥१॥ साहिबु मेरा नीत नवा स
दा सदा दातारु॥१॥ रहाऊ॥अनदिनु साहिबु सेवीऐ अं
ति छडाये सोइ॥सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ
॥२॥दइआल तेरे नामि तरा॥सद कुरबाणै जाऊ॥१॥रहा
ऊ॥ सरबं साचे एकु है दूजा नाही कोइ॥ताकी सेवा सो करे
जा कऊ नदरि करेइ॥३॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा॥सा
वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां॥दूजा नाहीं कोइ जि
सु आगे पिआरे जाइ कहा॥१॥रहाऊ॥सेवी साहिबु आप

णा अवरु न जाचंउ कोइ। नानक ताका दासु है बिंद बिंद चु
ख चुख होइ॥ ४॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंदु बिंदु होइ॥ १॥
रहाउ॥ ४॥ १॥ तिलंग महला १ घरु ३ ॥ ७ ॥ ७॥
इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाये॥ मेरै कं
त न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाइ॥ १॥ हंउ कुर
बानै जाउ मिहरवानी हउ कुरबानै जाउ॥ हउ कुरबानै जाउ
तिना कै लैनि जो तेरा नाउ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना के हउ
सद कुरबानै जाउ॥ १॥ रहाउ॥ काइआ रंगणि जे थीऐ पिआ
रे पाईऐ नाउ मजीठ॥ रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु
न डीठ॥ २॥ जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना के पासि॥ धु

डि तिना कीजै मिलै जीकहु नानक की अरदासि ॥३॥ आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥ नानक कामणि कंतै भावै आपे हीरा चेइि ॥४॥१॥३॥ तिलंग महला १ ॥ इ आनड़ीये मानड़ा काई करेहि ॥ आपि नडे घरि हरि रंगो कीना माणेहि सहु नेडै धन कंमलीये बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाई आनैणी भावका करसीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥ इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावे ॥ करण पलाह करे बहुतेरे साधन महलु न पावे ॥ विणु करमा किछु पाइऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाइऐ नाही

मई कामणि इआणी ॥२॥ जाय पुछहु सोहागणी वाहे किनी वा
ती सहु पाइऔ ॥ जो किछु करै सो भला करि मानीऔ हिकमतिहु
कमु चुकाइऔ ॥ जाके प्रेम पदारथु पाइऔ तउ चरणी चितल
इऔ ॥ सहु कहै सु कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऔ ॥
एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऔ ॥३॥ आपगु
वाइऔ तासहु पाईऔ अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि दे
खै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआ
री सा सोहागणि नानक सास भराई ॥ ऐसे रंग राती सहजि
की माती अहि निसि भाइ समाणी ॥ सुन्दर साइस रूप बिच
खणि कहीऔ सासिआणी ॥४॥२॥४॥

सूही महला १

कऊण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा। कउणु
गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥१॥ मेरे लाल
जीउ तेरा अंत न जाणा। तूं जलि थलि महि अलि भरि पुरि लीणा
तूं आपे सरब समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला ते
री सेव सराफ कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि
चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥
आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अंधुला नीच जा
ति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ता की संगत नानक रहिंदा
किउ करि मूडा पावै ॥ ४॥ २॥ ९ ॥

राग बिलावलु महला १ चउपदे घरु १

तू सुलतान कहा हउ मीआ तेरी कवण वडाई॥ जो तू देहि सु क-
हा सुआमी मै मूरखु कहणु न जाई॥१॥ तेरे गुण गावा देहि बु-
झाई॥ जैसे सच महि रहउ रजाई॥१॥ रहाउ॥ जो किछु होआ
सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई॥ तेरा अंतु न जाणा मेरे सा-
हिबा मैं अंधुले किआ चतुराई॥२॥ किआ हउ कथी कथे क-
थि देखा मै अकथु न कथना जाई॥ जो तुधु भावै सोई आखा
तिलु तेरी वडिआई॥३॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु
तन ताई॥ भगतहीन नानक जो होइ गा ता खसमै नाउ न जा-
ई॥४॥१॥

बिलावलु महला १

मन मंदरु तन वेस कलंदरु घटही तीरथि नावा ॥ एकसबदु मेरे प्रान बसतु है बाहुडि जनमिन आवा ॥१॥ मनुबेधिआ दिआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाहीं चिंत पराई ॥१॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरि पुरिलीणा घटि घटि जोति तुमारी ॥२॥ सिख मति सम बुधि तुमारी ॥ मंदिर छावा तेरे ॥ तुझ बिणु अवरन जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥३॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥ हजारे दे सबद सम्पूर्ण ॥

ह० भजनलाल कापी नवीस कटड़ा भाईसान गली संतसिंह अमृतसर